1. श्री निवास पानुरी

श्रीनिवास पानुरी जीक जनम 25 दिसम्बर 1920 ई० धनबाद जिलाक बरवाअड्डा (कल्याणपुर) में हेल रहे। इनखर बापेक नाम शालिग्राम पानुरी आर मायेक नाम दुखनी देवी हे। मूलतः पानुरी जी झारखण्डी नाञ लागथ। इनखर बूबा (दादा) तखनेक गया एखनेक नवादा जिलाक बेलदारी गाँव से आइ के बरवा अड्डाञ माड़ल रहथ। इनखर गूँगू (जेठा) कर खिचरी परोस कर दोकान रहे आर बाप खेती बारी करथ।

शिक्षा– पानुरी जीक पढ़ाई मेट्रिक तइक हेल हे। लोअर प्राइमेरी क्लास गाँवे में करल बादे जिला स्कूल धनबाद में नाम लिखावला आर 1939 ई० में मेट्रिक पास करला। गरीबीक चलते आगू पढ़ाय नाञ हेल।

पेशा–1939 में आर माय 1944 में दुनियाय छोइड देला। घार चलवे खातिर धनबादेक पुरना बाजारे एगो पान गुमटी खोलला चूना–कथ्था से हाथ रंगाय लागल।

पानुरी जी जनवादी विचार धाराक लोक रहल कर चलते धनबाद कर नामी झारखंडी नेता विनोद बिहारी महतो आर ए०के० राय से भी मेल जोल रहे। एखिन जहिया भी इखर पान गुमटी बाठे ले गुजरथ, इनखर गुमटीञ पान जरुर खाथ आर दु चार कविताउ सुनथ।

खोरठा साहितेक जोगदानः– साहित्य जगत् में ई 1946 में अइला कवि मन जागल आर कवि सम्मेलन में कविता सुनल बादे इनखर मने कविता, गीत लिखेक भाव जागल आर कविता–गीत लिखे लागला। ई सब के चलते इनखर परिचय बड़–बड़ कवि लेखक से हेल, जकर में राहुल सांकृत्यायन, राधाकृष्ण, हंस कुमार तिवारी, बेधड़क बनारसी, राम दयाल पाण्डेय, जानकी वल्लभ शास्त्री,भवानी प्रसाद मिश्र, वीर भारत तलवार प्रमुख रहथ।

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन जी उनखा चिट्टी लिखल रहथ– ''मातृभाषाओं का अधिकार कोई छीन नहीं सकता है न ही लोक कविता को आगे बढ़ने से कोई रोक सकता है, हाँ कविता करने में आप साहित्यिक कवियों की कविताओं का अनुकरण हर्गिज न करे। उसके लिए आदर्श हे लोक कवि और उनकी अछूती भाषा।'' ई चिट्टी उनखा मान आर आसिरवादेक फूल रहे, से ले ऊ खोरठा भासाञ रचना लिखे लागला।

खोरठाञ उनखर पहिल किताब बाल किरण 1954 में छपल रहे। 1956–57 में मातृ–भाषा नामेक एगो खोरठाञ पतरीका बहरावे लागला, भले ई छोट–मोट रहे आर बेसी दिन नाञ बहराइल। 1957 में राँचीञ आकाशवाणी (रेडियों स्टेशन) खुलल आर हुवाँ से लोक भाषाक कवि–गीतकार कर खोजइर हेवे लागल तो ई खोरठाक कवि–गीतकार के जोड़ो करे खातिर खोरठा साहित्य समिति ''नामेक एगो संगठन बनावला, जकर में मुइख रहथ–नारायण महतो, नरेश सिंह नीलकमल, विश्वनाथ दसौंधी 'राज' आर विश्वनाथ प्रसाद नागर। 1970 में 'खोरठा' नामेक पतरिका फिन बहरावे लागला। भले एहो बेसी दिन नाञ चलल। राँची विश्वविद्यालय, राँची में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खुलल आर खोरठाक पढ़ाइ 1984 से सुरू हेल तो ऊ हुवाँक सिलेबस बोर्ड कर आजीवन सदस्य बनला। 07 अक्टूबर 1986 के ई दुनियाय छोइड़ देला।

कृति – प्रकाशित–कविता संग्रह–बाल किरण, आँखीक गीत, तितकी।
खंड काव्य –रामकथामृत, अगनि परीक्षा,
अनुबाद – मेघदूत कर खोरठाञ मुक्त छन्दे अनुवाद

नाटक – उद्‌भासल कर्ण, चाभी–काठी

अप्रकाशित– पारिजात (काव्य), अपराजित (काव्य), मोहमंग, हमर गाँव, भ्रमरगीत, युगेक गीता, छोटो जी (हास्य व्यंग्य),समाधान, मेरे गीत।

कहनी संग्रह – रकते भींजल पाँखा।

इनखर भाषा शैली में हिन्दी–खोरठा दुइयो कर शब्द पावल जाहे। रचना गम्भीर हेवहे। एखनेक समय ऊ खोरठा शिष्ट साहित्य के जनक कहल जाय पारे। अइसे इनखा कोय खोरठाक 'अक्षय बोर' कहल हथ तोय कोय खोरठा शिष्ट साहित्य कर जनक। जे बा हे खोरठा के ई एगो मील कर पत्थर लागथ।

खोरठा पइद साहितेक विकासे जोगदान–श्रीनिवास पानुरी जी मुइख रूपे कवि रहथ। से ले कविता–गीत बेसी लिखल हथ। पइद विधाञाञ काव्य में रामकथामृत, अगनि परीखा मुइख हे, जे रामायण (रामकथा) पर आधारित हे। रामकथा में मोटे तीन भाग हे।अगनि परीखा रामकथामृत के पूरक रूपे लिखाइल हे। मेघदूत कालिदास कर 'मेघदूतम' कर खोरठाञ अनुवाद मुक्त छन्दे करल हथ।

कविता संकलन में बाल किरण आर आँखीक गीत बेसी लोकप्रिय हे ई सब में गीत तर्जे शृंगारिक आर प्राकृतिक चित्रण बेसी हे। एकर में इनखर कोमल भावना झरल हे। श्रीनिवास पानुरी जीक काव्यगत विसेसता पर नइजर राखल जाय तो पावल जाहे कि उनखर काइब में यथार्थवादी आर कल्पनावादी प्रवृति पावल जाहे। यथार्थवादी मेनेक समाज में रहवइया लोक कर दसा आर दुरदसाक सही चित्रण। एकर भीतरही जनवादी विचार आवहे। एकर में कला जीवन खातिर (कला जीवन के लिए) आवहे। दूसर 'कला कला के लिए मेनेक मनोरंजन खातिर, एकर भीतरे छायावादी भावेक प्रकृति चित्रण आर 'मानवीकरण' आवहे।

छायावादी भावेक कविता

पानुरी जीक कविताञ देखल जाय तो उनखर कविताञ दुइयो रकमेक भाव पावाहे, एतने नाञ मनोरंजनेक भीतरे शृंगारिक भावो पावा हे। पानुरीजीक 'मेघदूत' काव्य कर खोरठाञ अनुवाद कर पाछुञ शृंगारिक भाव रहे। 'आँखीक गीत' कविता संग्रहें छायावादी भाव बेसी पावा हे। हियाँ छायावादी भावेक कविताक कुछ पटतइर हे।

जइसेः–

(i) प्रकृति चित्रण परक कविता पंक्ति

''आइझ हमर गीतेक देसें
फूटल सुधे फ्‌ल
डारी–डारी, पाते–पाते
लटकल अलिकूल।''

(ii) छायावादी कविताक मइधे काल्पनिक लोके (आदर्श लोक में)

विचरण करेक भावे से जुटल कविताक पंक्ति–
''नील आकाशें उड़े खातिर
पागल होवे मन
आनन्द सागरे हुब–डूब
सरग छुवे तन। ''

(iii) पलायनवादी प्रवृति भावेक पंक्ति–

हम सुनल ही शून्येक डाक
के ऊ हमरा डाके
आर नांय रहबो घरे
कुम्हार चाकाक चाके।

(iv) अज्ञात प्रेयसी के आलम्बन बनाइके आपन प्रेम के व्यक्त करेक भाव परक पंक्ति–

आइझ हामर काने
कोन अरूपेक टाने
फ़टल ककर गालेक लाली
आइझ हामर गाने।

(v) छायावादी प्रकृतिक एक गुन आत्मकेन्द्रितो हे।

ई भावेक पंक्ति
खोरठा सागरें झाँप देल ही
नतून सुधक आशें
जखन धरती डूइब चलल
लोहराइन किचिन वासें

जनवादी कवि रूपे पानुरी जी

एकर बादे उनखर जनवादी सुर के देखल जाइत। ऊ आपने कहल हलथ कि हाम कम्यूनिष्ठ विचार धाराक लोक लागों। राजनीति में जे कम्यूनिष्ट विचार धाराक हे ओहे साहितें जनवादी विचारधाराक कवि कहा हे। मोटा–मोटी जनवादी प्रवृतिक मूल विसेसता ई नीयर हे।

(1) उपेक्षित (अलाइग) आर कमजोर वर्ग कर चित्रण –ई भावेक कविता हे–

मानभूमक माटी तरे, हीरा मोती माणिक फरे
ताव पेटेक जालांय हाय, मान भूमेक लोक मोरे।

(2) सोसनेक विरोधो – जनवादी साहितकार सभे सोसनेक विरोधी स्वर भर हथ, आवाज देहथ आर ताक परल आह्वानों कर हथ।

ई भावेक कविता हे –

सुगमे नाँय देले
कि करबा लूइट लेलें
मिल बहरै तो गरीब जखन
सँइच सँइच राखा जे धन।

(3) जनवाद भाग्यवाद कर विरोधो–जनवादी साहितकार सभे भाइग पर बिसुवास नाञ करहथ। पानुरी जी लिखत हथ –

भाग्येक भरोसा छोड़ा
नाँय तो परतो पीठें कोड़ा
ईंटा अइसन गुँडा होवा
किम्बा चापत चूड़ा
किम्बा भोथर हँसुवे, रेततो गरदन

सँइच सँइच राखा जे धन

(4) जनवाद जागरन संदेसवाहक–जनवाद साहितकार सोसन बिरोधी हेवहथ से ले सोसनेक बिरोधे लोक के जगावेक संदेश देहे। 'जागा रे भाय जागा' कविताक पंक्ति–

जागा रे भाय जागा
आर कते दिन रहबा बोका
बुद्धिक जोरे आइज, मानुस आकाशे उड़े
गोदिक जोरे आइज अंधरा पोथी पढ़े
साहेब ऐसन कुरसी बैस
खाता लिखे कोंका – जागा रे भाय जागा।

(5) जनवाद उलगुलानेक पोसक–जनवाद उलगुलान (क्रान्ति) कर पोसक लागे। आपन मान–सम्मान कर रइखा(रक्षा)खातिर आगु बढ़ेक बात कविक भासाञ–

बापेक यदि बेटा लागा
मान सुन्दरीक मान राखा
नाँय तो धोती छोइड़
साड़ी पीन्ध, पीन्ध हाथे शाँखा।

हियाँ मान सुन्दरीक माने मानभूमेक माटी, 1956 कर पहिले एखनेक धनबाद तखनेक मानसून जिला रहे बिहार कर।

खोरठा गइद साहिते जोगदान

पानुरी जी खोरठा गइद साहित नाटक से सुरू करल रहथ। ऊ 1963 में उद्भासल कर्ण नाटक लिखल हथ जकर में 11 दिरिस हे, अंक कर पता नाञ। ई नीयर, ई एकांकी कहाय सक हे मगुर नाटक नाम्हीं छपल हे। एकर मुइख पात्र महाभारतेक कर्ण हथ। कथावस्तुओं ओहे हे। पात्रों ओहे सब हथ। ई नाटक खाली रंगमचे खेले खातिर लिखल गेल हे आर सोबले पहिले बरवाअड्डाञ खेलल गेल हे। कथोपकथन भले खोरठाञ हे मगुर भाव ओहे हे।

इनखर दूसर नाटक चाभी–काठी हे, जेकर में महाजनी सूदखोर पर लिखल गेल हे। एहो नाटक भले 20 दिरिस हे मगुर अंक कर नाम नाञ हे। हाँ, ई मौलिक नाटक लागे। महाजनी सूदखोरीक विरोधे आवाज उठावल बादे महाजन आपन चाभी नायक (शंभु) के देइ देहे जे ले हे नाञ मेन्तुक ओकर बेटा के हाथें देइ देहे।

कहनी बिधाञ ऊ पाँच कहनीक गोछ 'रकते भींजल पाँखा' लिखल हथ– जकर में कहनी पाठ हे– मनबोध, जादू, बदला, कुसमी आर रकते भींजल पाँखा। मनबोध कहनी में भाय–भायेक मांझे प्यार देखवल गेल हे। जादू कहनीञ गाँवेक छुटभइया नेता कर गुन (चरित्र) देखवल गेल हे। बदला कहनीञ जमींदारी परियाक (प्रथाक) जमींदारेक बेभिचारी परवीरित (प्रवृति) देखवल गेल हे। एकर में जमींदार जदि गरीब इया आपन अधीने काम करइत लोकेक बेटी के हवस कर सिकार बनवल तो हुवे जमींदार घारे काम करइत लोक जमींदारेक बेटी पर डोरा डाइल के आर आपन अधीन कइर के बदला ले हे, एतने नाञ ऊ जमींदारेक पासे ओकर बेटी के राखे में सफल हेल हे। ई नीयर एकर में बेभिचारी गुन रहल परो जनबादी विचार आइ गेल हे। कुसमी कहनीयो यौन शोषण पर लिखल गेल हे। एकर में मालिक आपन नोकरानी के हवस के सिकार बनव हे। ऊ पहिले माँय पर यौन शोषण कर हे बादे ओकर बेटीओं पर कर हे। मगुर बेटी के माँय बनवल बादे बिहा कइर के लान हे आर ओकर जिनगी ताइर दे हे। एहे सुधर हेल। पाँचवाँ कहनी रकते भींजल

पाँखा हे जकर में दबंग (धनगर, बलगर) लोक से लूटपाट करेक रूप देखवल गेल हे। चील, सांढ आर दबंग लोक के लेइके लिखल कहनीञ तात्कालिक शोषण वृत्ति के देखवल गेल हे। ई किताब एखन तइक छपल नखे, मगुर एकर पाण्डुलिपि राँची विश्वविद्यालय कर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में 1984 में जमा करल गेल रहे। आर हुवाँ से उनखा वापस मिलल नाञ। काहे कि पानुरी जी 1986 में दुनियाय छोइड़ देला।

निबंध बिधाहु ऊ कलम चलावल रहथ। उनखर लिखल एगो निबंध 'खोरठा साहिते धरती' दस कलासेक किताब' दु डाइर जिरहुल फूल में छपल हे। ओकरे से पता चल हे कि ऊ एगो बेस निबंध कारो रहथ। ई निबंधे खोरठा साहितेक जनम कर बादे लेखकेक मने उठल खुसी (उत्साह) देखवल हथ। मगुर एहे निबंधे खोरठा गुटबाजी से हाय निसार (निराश)हेल कर भावो झलके हे। ऊ खोरठा लेखक खातिर खुला आसमान (मुक्त गगन) कर पछधर रहथ।

ई नीयर कहल जाय पारे कि पानुरी जीक खोरठा गइद साहितेक विकासे बेस जोगदान हे, एकर में कोनो दुमत नखें।